४. सिंधु का जल

– अशोक चक्रधर

आसपास

नदी के जल–प्रदूषण पर चर्चा कीजिए :–

कृति के आवश्यक सोपान :

● विद्‌यार्थियों से उनके परिवेश की नदी का नाम पूछें । ● उस नदी के उद्‌गम–स्थल का नाम जानें । ● नदी के जल का उपयोग किन कामों के लिए होता है, बताने के लिए कहें । ● नदी की वर्तमान स्थिति और सुधार के उपाय पर चर्चा कराएँ ।

सतत प्रवाहमान !
जीवन की पहचान !
मैं एक गीली हलचल हूँ,
मेरे स्वर में कल–कल है
मैं जल हूँ !
सिंधु यानी
धरती पर सभ्यताओं का
आदि बिंदु ।
मेरे ही किनारे पर
संस्कृतियों ने साँस ली
मेरे ही तटों पर
इंसानियत के यज्ञ हुए
गति कभी मंद ना हुई मेरी
गति में चंचल
पर भावना में अचल हूँ ।
मैं सिंधु नदी का
पावन जल हूँ ।
मैं नहाने वाले से
नहीं पूछता उसकी जात,
उनका मजहब,
उनका धर्म,
मैं तो बस जानता हूँ
जीवन का मर्म ।
वो लहरें
जो सहसा उछलती हैं,
सदा जिंदगी की ओर मचलती हैं ।
प्यास बुझाने से पहले
मैं नहीं पूछता
दोस्त है या दुश्मन ।

परिचय

जन्म : ८ फरवरी १९५१ खुर्जा (उ.प्र)

परिचय : अशोक चक्रधर जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । आपने कविता, हास्य–व्यंग्य, निबंध, नाटक, बालसाहित्य, समीक्षा, अनुवाद, पटकथा आदि अनेक विधाओं में लेखन किया है । **प्रमुख कृतियाँ :** बूढ़े बच्चे, तमाशा, खिड़कियाँ, बोल–गप्पे, जो करे सो जोकर आदि कविता संग्रह ।

पद्‌य संबंधी

नई कविता : संवेदना के साथ मानवीय परिवेश के संपूर्ण वैविध्य को नए शिल्प में अभिव्यक्त करने वाली काव्यधारा है ।

प्रस्तुत कविता के माध्यम से चक्रधर जी ने सभ्यता, संस्कृति, इंसानियत, सर्वधर्म समभाव, परदुःखकातरता आदि मानवीय गुणों पर दृष्टिक्षेप किया है।

मैल हटाने से पहले
नहीं पूछता मुस्लिम है या हिंदुअन ।
मैं तो सबका हूँ
और जी भर के पिएँ ।
छोटी-छोटी सांस्कृतिक नदियाँ
दौड़ी-दौड़ी आती हैं
मुझमें सभ्यताएँ समाती हैं
घुल-मिल जाती हैं
लेकिन क्या बताऊँ
और कैसे कहूँ
कभी-कभी
बहता हुआ आता है लहू
जब मेरे घाटों पर
खनकती हैं तलवारें
गूँजती हैं टापें
गरजती हैं तोपें
होते हैं धमाके
और शहीद होते हैं
रणबाँकुरे बाँके,
मैं नहीं पूछता
कि वे थे कहाँ के ।
मैं नहीं देखता
कि वे यहाँ के हैं
कि वहाँ के ।
मैं तो सबके घाव धोता हूँ
विधवा की आँखों में
आँसू बनकर मैं ही तो रोता हूँ ।

ऐसे बहूँ या वैसे
प्यारे मनुष्यों, बताऊँ कैसे
मैं सिंधु में बिंदु हूँ,
बिंदु में सिंधु हूँ,
लहराते बिंबों में
झिलमिलाता इंदु हूँ ।

—०—

शब्द संसार

प्रवाहमान (पु.वि.) = गतिशील, निरंतर, प्रवाहित
मजहब (सं.पुं.अ.) = धर्म
मर्म (पुं.सं.) = सार
टापें (स्त्री.सं.) = घोड़ों के पैरों के जमीन पर पड़ने का शब्द
रणबाँकुरे (पुं.सं.) = बहादुर, वीर, योद्‌धा
बिंब (पुं.सं.) = छाया, आभास
इंदु (पुं.सं.) = चंद्रमा
घाव धोना (क्रि.) = मरहमपट्‌टी करना, घाव साफ करना

संभाषणीय

'जल ही जीवन है' विषय पर कक्षा में गुट बनाकर चर्चा कीजिए ।

पठनीय

रवींद्रनाथ टैगोर की कोई कविता पढ़कर ताल और लय के साथ उसका गायन कीजिए ।

श्रवणीय

अंतरजाल/यू ट्यूब से 'जल संधारण' संबंधी जानकारी सुनकर उसका संकलन कीजिए ।

‘मैं हूँ नदी’ इस विषय पर कविता कीजिए ।

कल्पना पल्लवन

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–

(क)आकृति पूर्ण कीजिए :

प्राकृतिक जलस्रोत

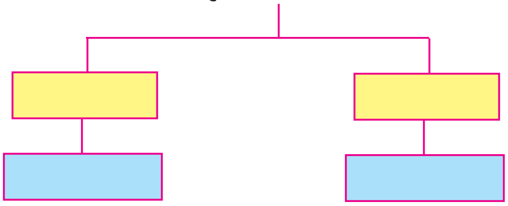

(ख) पूर्ण कीजिए:–

पावन जल स्नान करने वालों से नहीं पूछता –

१.

२.

३.

२) भारत के मानचित्र में अलग–अलग राज्यों में बहने वाली नदियों की जानकारी निम्न मुद्दों के आधार पर तालिका में लिखिए:

अ.क्र.	नदी का नाम	उद्‌गम स्थल	राज्य	बाँध का नाम

(३) पाठ से ढूँढ़कर लिखिए :

(च) संगीत– लय निर्माण करने वाले शब्द ।

(छ) भिन्नार्थक शब्दों के अर्थ लिखिए और ऐसे अन्य दस शब्द ढूँढ़िए ।

अलि–　　　　अली–

पाठ से आगे

‘नदी जल मार्ग योजना’ के संदर्भ में अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१.) प्रेरणार्थक क्रिया का रूप पहचानकर उसका वाक्य में प्रयोग कीजिए :–

(क) जिसे वहाँ से जबरन हटाना पड़ता था ।

(ख) महाराजा उम्मेद सिंह द्‌वारा निर्मित होने से ‘उम्मेद भवन’ कहलवाया जाता है ।

(२.) सहायक क्रिया पहचानिए :–

(च) हम मेहरान गढ़ किले की ओर बढ़ने लगे ।

(छ) काँच का कार्य पर्यटकों को आश्चर्यचकित कर देता है ।

(३.) सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।

(त) होना (थ) पड़ना (द) रहना (ध)करना

रचना बोध

....

....

....